कथा सरिता

एक एकता ऐसी भी

एक प्राचीन मंदिर की छत पर कुछ कबूतर राजीखुशी रहते थे। एक दिन वार्षिकोत्सव की तैयारी के लिये मंदिर का जीर्णोद्धार होने लगा, तब कबूतरों को मंदिर छोड़कर पास के चर्च में जाना पड़ा।

चर्च के ऊपर रहने वाले कबूतर भी नये कबूतरों के साथ राजीखुशी रहने लगे। क्रिसमस नज़दीक था तो चर्च का भी रंगरोगन शुरू हो गया। अत: सभी कबूतरों को जाना पड़ा नये ठिकाने की तलाश में।

किस्मत से पास के एक मस्जिद में उन्हें जगह मिल गयी और मस्जिद में रहने वाले कबूतरों ने उनका खुशी-खुशी स्वागत किया।

रमज़ान का समय था, मस्जिद की साफ-सफाई भी शुरू हो गयी, तो सभी कबूतर वापस उसी प्राचीन मंदिर की छत पर आ गये।

एक दिन मंदिर की छत पर बैठे कबूतरों ने देखा कि नीचे चौक में धार्मिक उन्माद एवं दंगे हो गये।

छोटे से कबूतर ने अपनी माँ से पूछा: 'माँ ये कौन लोग हैं?'

माँ ने कहा: 'ये मनुष्य हैं।' छोटे कबूतर ने पूछा: 'माँ, ये लोग आपस में लड़ क्यों रहे हैं?'

माँ ने कहा: 'जो मनुष्य मंदिर जाते हैं वो हिन्दू कहलाते हैं, चर्च जाने वाले ईसाई और मस्जिद जाने वाले मनुष्य मुस्लिम कहलाते हैं।'

छोटा कबूतर बोला: 'माँ एसा क्यों? जब हम मंदिर में थे तब हम कबूतर कहलाते थे, चर्च में गये तब भी कबूतर कहलाते थे और जब मस्जिद में गये तब भी कबूतर कहलाते थे, इसी तरह यह लोग भी मनुष्य कहलाने चाहिये चाहे कहीं भी जायें।' माँ बोली: 'मैंने, तुमने और हमारे साथी कबूतरों ने उस एक ईश्वरीय सत्ता का अनुभव किया है, इसलिये हम इतनी ऊंचाई पर शांतिपूर्वक रहते हैं। इन लोगों को उस एक ईश्वरीय सत्ता का अनुभव होना बाकी है, इसलिये यह लोग हमसे नीचे रहते हैं और आपस में दंगे फसाद करते हैं।'

बात छोटी सी है, पर मनन करने योग्य है। परमात्मा ने मनुष्यों के लिए एक ही सृष्टि की रचना की, एक ही धरती-आकाश, एक ही प्रकृति, सूर्य-चाँद की रोशनी सबको बराबर दी, एक जैसा शरीर दिया, फिर ये झूठे धर्म के नाम पर भेदभाव क्यों...!

वो क्षण ही आपका है

एक आदमी मर गया। जब उसे महसूस हुआ तो उसने देखा कि भगवान उसके पास आ रहे हैं और उनके हाथ में एक सूटकेस है।

भगवान ने कहा: 'पुत्र चलो, अब समय हो गया।' आश्चर्यचकित होकर आदमी ने जबाव दिया: 'अभी इतनी जल्दी? अभी तो मुझे बहुत काम करने हैं। मैं क्षमा चाहता हूँ, किन्तु अभी चलने का समय नहीं है। आपके सूटकेस में क्या है?'

भगवान ने कहा: 'तुम्हारा सामान।'

'मेरा सामान! आपका मतलब है कि मेरी वस्तुएं, मेरे कपड़े, मेरा धन?' आदमी ने पूछा।

भगवान ने प्रत्युत्तर में कहा: 'ये वस्तुएं तुम्हारी नहीं हैं। ये तो पृथ्वी से सम्बंधित हैं।'

आदमी ने पूछा: 'मेरी यादें? भगवान ने जवाब दिया: 'वे तो कभी भी तुम्हारी नहीं थीं। वे तो समय की थीं।'

'फिर तो ये मेरी बुद्धिमता होगी?' भगवान ने फिर कहा: 'वह तो तुम्हारी कभी भी नहीं थी, वो तो परिस्थिति जन्य थी।'

'तो ये मेरा परिवार और मेरे मित्र हैं?' भगवान ने जबाव दिया: 'क्षमा करो, वे तो कभी भी तुम्हारे नहीं थे। वे तो राह में मिलने वाले पथिक थे।'

'फिर तो निश्चित ही यह मेरा शरीर होगा?'

भगवान ने मुस्कुरा कर कहा: 'वह तो कभी भी तुम्हारा नहीं हो सकता, क्योंकि वह तो राख है।'

'तो क्या यह मेरी आत्मा है?' 'नहीं वह तो मेरी है।' - भगवान ने कहा।

भयभीत होकर आदमी ने भगवान के हाथ से सूटकेस ले लिया और उसे खोल दिया यह देखने के लिए कि सूटकेस में क्या है। वह सूटकेस खाली था। आदमी की आँखों में आँसू आ गए और उसने आश्चर्य से कहा: 'मेरे पास कभी भी कुछ नहीं था!

भगवान ने जवाब दिया: 'यही सत्य है। प्रत्येक क्षण जो तुमने जिया, वही तुम्हारा था।'

ज़िन्दगी क्षणिक है और वो ही क्षण आपका है। इस कारण जो भी समय आपके पास है, उसे भरपूर जियें। आज में जियें। खुश होना कभी न भूलें। यही एक बात महत्व रखती है। भौतिक वस्तुएं और जिस भी चीज़ के लिए आप यहाँ लड़ते हैं, मेहनत करते हैं...आप यहाँ से कुछ भी नहीं ले जा सकते हैं।

ये समय फिर लौटकर नहीं आयेगा...

एक फ़कीर बहुत देर से नदी के किनारे बैठा था। किसी ने उनसे पूछा: 'बाबा! क्या कर रहे हो?'

फ़कीर ने कहा : 'इंतज़ार कर रहा हूँ कि पूरी नदी बह जाए, तो फिर पार करूँ।'

उस व्यक्ति ने कहा : 'कैसी बात करते हो बाबा, पूरा जल बहने के इंतज़ार में तो तुम कभी नदी पार ही नहीं कर पाओगे...!'

फ़कीर ने कहा : 'यही तो मैं तुम लोगों को समझाना चाहता हूँ, कि तुम लोग जो सदा यह कहते रहते हो कि एक बार जीवन की ज़िम्मेदारियाँ पूरी हो जायें तो मौज करूँ, घूमूँ फिरूँ, सबसे मिलूँ, समाज सेवा करूँ...।

तो जैसे नदी का जल खत्म नहीं होगा, हमको ही इस जल से पार जाने का रास्ता बनाना है, उसी तरह ज़िम्मेदारियाँ पूरी करने के इंतज़ार में उम्र समाप्त हो जायेगी, जीवन खत्म हो जायेगा, पर ये ज़िम्मेदारियाँ और काम कभी खत्म नहीं होंगे।

इस जीवन में रहते हमें अपनी ज़िम्मेदारियाँ तो निभानी ही हैं, परंतु हमें जब भी अवसर मिले तो वो कार्य हमें अवश्य कर लेना है, जिससे हमें सच्ची सुख शांति की प्राप्ति हो और हमारा और सबका कल्याण हो। क्योंकि ये समय फिर लौटकर नहीं आयेगा।

भुवनेश्वर-ओडिशा। ज्ञानचर्चा के पश्चात् दलाई लामा को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. लीना, ब्र.कु. दुर्गेश नंदिनी, ब्र.कु. राजेश, ब्र.कु. नंदा, ब्र.कु. विजय व अन्य।

मुज़फ्फरपुर-बिहार। आम्रपाली ऑडीटोरियम में 'किसान सशक्तिकरण अभियान' कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए कृषि राज्यमंत्री डॉ. प्रेम कुमार, ग्रामीण विकास प्रभाग की अध्यक्षा ब्र.कु. सरला, उपाध्यक्ष ब्र.कु.राजू,मा.आबू, ब्र.कु. रानी, सांसद रमा देवी, विधायक बेबी कुमारी, संयुक्त कृषि निदेशक सुरेंद्र नाथ, ब्र.कु.अंजु , ब्र.कु. अनिता व अन्य।

सुंदरबनी-जम्मू कश्मीर। आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी समझाने के पश्चात् महामण्डलेश्वर स्वामी अखिलेश्वरानंद जी महाराज को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. राजकुमारी। साथ हैं ब्र.कु. सविता, ब्र.कु. इच्छा, ब्र.कु. नीलम तथा अन्य।

रतलाम-डोंगरे नगर(म.प्र.)। विश्व यादगार दिवस पर सड़क दुर्घटना में पीड़ितों की स्मृति में आयोजित कार्यक्रम में अतिथियों को ईश्वरीय सौगात देने के पश्चात् समूह चित्र में औद्योगिक थाना क्षेत्र के टी.आई. राजेश चौहान, जिला ट्रांसपोर्ट सचिव कमलेश मोदी, ब्र.कु.सविता तथा अन्य।

अलीराजपुर-म.प्र.। 'सर्व धर्म सद्भावना सम्मेलन' का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए मुस्लिम धर्म के इर्शाद अहमद कुरैशी, गायत्री परिवार के संतोष भाई, बोहरा धर्म के जाकिर भाई, हिन्दु धर्म के गोविन्द शास्त्री, स्वामी जय केशव जी, ब्र.कु. नारायण, ब्र.कु. माधुरी तथा ब्र.कु.निर्मला।

भरतपुर-राज.। 'स्नेह मिलन' कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए एस.पी. अनिल कुमार टोंक, ओमप्रकाश शर्मा,पूर्व प्राचार्य,आर.डी. गर्ल्स कॉलेज, श्रीमति मिनाक्षी गुप्ता,स्त्री रोग विशेषज्ञ, ब्र.कु. कविता, ब्र.कु. बबिता तथा अन्य।